शोध मंथन Vol. XVII No.2 Apr.- June. 2026 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X, Impact Factor 8.889 (SJIF)
https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.034

पर्वतीय क्षेत्रों में सतत विकास और टिकाऊ आजीविका के अवसरों का भौगोलिक अध्ययन

प्राप्तिः 16.05.2026
स्वीकृतः 16.06.2026

34

अमृता सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर (भूगोल विभाग)
यु.एन.पी.जी.कॉलेज पडरौना कुशीनगर
ईमेलः *amritasingh.27.am@gmail.com*

सारांश

पर्वतीय क्षेत्र प्राकृतिक संसाधनों, जैव विविधता और सांस्कृतिक विरासत की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं, परंतु बहुत सी भौगोलिक विषमताओं, सीमित आधारभूत सुविधाओं, प्राकृतिक आपदाओं व जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के कारण यहां की ओर यहां के निवासियों की आजीविका निरंतर चुनौतीपूर्ण बनी रहती है। प्रस्तुत इस शोध के अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यही है कि, पर्वतीय क्षेत्रो में सतत विकास व टिकाऊ आजीविका के अवसर क्या हो सकते हैं, इसे बढ़ावा देने के लिए क्या किया जा सकता है। इस शोध पत्र मे कृषि, पर्यटन, वानिकी, पशुपालन, बागबानी तथा हस्तशिल्प जैसे प्रमुख आजीविका स्त्रोतो का विश्लेषण किया गया है, साथ ही पर्यावरण संतुलन को किस प्रकार बनाए रखा जाए कि स्थानीय संसाधनो का समुचित उपयोग हो सके। अध्ययन में यह भी स्पष्ट किया गया है कि, किस प्रकार स्थानीय समुदाय की सहभागिता, आधुनिक तकनीक का समावेश तथा सरकार द्वारा चलाई गई योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन किस प्रकार सतत विकास को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं तथा पर्वतीय क्षेत्रो में जैविक कृषि, इको टूरिज्म, जल संरक्षण तथा समुदाय आधारित सहभागी गतिविधियां टिकाऊ आजीविका के प्रभावी साधन बन सकती हैं। पर्वतीय क्षेत्रो में सतत विकास की अवधारणा न केवल प्राकृतिक संसाधनो के संरक्षण को सुनिश्चित करती है, बल्कि वहां की स्थानीय जनसंख्या के जीवन स्तर में सुधार करते हुए दीर्घकालिक अजीविका सुरक्षा प्रदान करने में भी सहायक सिद्ध होती है।

मुख्य शब्द

जैव विविधता, सांस्कृतिक विरासत, जलवायु परिवर्तन, टिकाऊ आजीविका, सतत विकास, वानिकी, इको टूरिज्म, जैविक कृषि

प्रस्तावना

संसाधनों के प्रयोग द्वारा आजीविका की आवश्यकता की पूर्ति करना ही विकास कहलाता है। आज संपूर्ण पर्वतीय प्रदेशो के आर्थिक विकास की आवश्यकता है,इसके अलावा विकासात्मक गतिविधियों

की क्षेत्रीय विषमताओं को दुर करते हुए एक बेहतर रणनीति के द्वारा सभी प्रकार की समस्याओं को दुर करना भी लक्ष्य होना चाहिए। पर्वतीय क्षेत्र के विकास के लिए एक वैकल्पिक विकास नीति पर विचार करने की आवश्यकता है, जो पर्यावरण के अनुकुल हो,जो इन क्षेत्रों के प्राकृतिक संसाधनों के सरंक्षण में समर्थ हो और जो स्थानीय समाज और संस्कृति के प्रति संवेदनशील हो।

सतत विकास संसाधनों के प्रयोग का ऐसा तरीका है, जिसके द्वारा आने वाली पीढ़ियों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए वर्तमान की आवश्यकता पुरी की जा सके। सतत विकास को निरंतरता के साथ विकास या टिकाऊ विकास भी कहते हैं। टिकाऊ विकास,टिकाऊ आजीविका से ही जुड़ा हुआ है। पर्वतीय क्षेत्रों में टिकाऊ आजीविका के लिए पर्यटन, कृषि, और वन संसाधनों का दोहन जैसे कई तरीके अपनाए जा सकते हैं।

ये ऐसे तरीके है,जिनसे स्थानीय समुदायों को आर्थिक लाभ मिल सकता है और पर्यावरण को नुकसान नही पहुंचता है क्योंकि कोई भी विकास पर्यावरण की कीमत पर नही आ सकता। वर्तमान समय में हमें पर्वतीय क्षेत्र के पर्यावरण के अतिसंवेदनशीलता और संरक्षण की आवश्यकता पर ध्यान देने की जरूरत है। इसके लिए एक ऐसी रणनीति तैयार करने पर जोर देना होगा, जो पर्वतीय क्षेत्र की स्थिर आर्थिक विकास के साथ साथ पारिस्थितिकी व्यवस्था की सुरक्षा को भी महत्व देता हो,जिसमें वर्तमान मानवीय जरूरतों को पूरा करते हुए आने वाली भावी पीढ़ियों की आवश्यकता को भी पूरा करना सुनिश्चत किया जा सके।

भारत के तीसरे सबसे बड़े उद्योग के रूप में पर्यटन उद्योग का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें लगभग 1 करोड़ व्यक्तियों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्राप्त है। भारत के पर्वतीय क्षेत्र अपना एक विशेष स्थान रखते है,तथा इन क्षेत्रों में पर्यटन सबसे तेजी से आगे बढ़ते आर्थिक क्षेत्र में से एक है,तथा पर्यटन का व्यापार, रोजगार सृजन, निवेश और संरचना विकास एंव सामाजिक समावेशन पर बहुत महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, 'वसुधैव कुटुंबकम' का भारत का दर्शन पूरे विश्व को एक परिवार के रूप में देखता है,अभी हाल ही मे जारी **धर्मशाला घोषणा** पत्र दस दिशा में बढ़ाया गया एक सही कदम है जिसका उद्देश्य वैश्विक पर्यटन को समर्थन देने और घरेलु पर्यटन को बढ़ावा देने में भारत सरकार की क्षमता को साकार करना है। विश्व यात्रा और **पर्यटन परिषद की वर्ष 2022** की रिपोर्ट में विश्व सकल घरेलु उत्पाद में योगदान के मामले में भारत के पर्यटन को **दसवें स्थान** पर रखा गया था। वित्त वर्ष 2020 में पर्यटन क्षेत्र में कुल 39 मिलियन रोजगार अवसर सृजित हुए जो देश के 8% रोजगार का प्रतिनिधित्व करते है। वर्ष 2029 तक यह 53 मिलियन नौकरियों के लिए उत्तरदाई होगा। भारत के कुछ प्रमुख पर्वतीय पर्यटन स्थल हिमाचल प्रदेश के मनाली, कुल्लु कश्मीर के गुलमर्ग,श्रीनगर, लद्दाख पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग उत्तराखंड के नैनीताल,चकराता,मसूरी इत्यादी है। इन क्षेत्रों के पर्वतीय पर्यटन में प्राकृतिक परिदृश्य अनूठी सस्कृतियों और मनोरंजन के कई अवसर मिलतें है,तथा पर्यटन से स्थानीय आर्थिक विकास और समाजिक बदलाव को बढ़ावा मिलता है। पर्वतीय पर्यटन में स्थानीय आर्थिक विकास और समाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देने की उच्च क्षमता है, इसके अलावा पर्वतीय क्षेत्र का पर्यटन स्थानीय समुदायों के लिए आर्थिक अवसर प्रदान करता है, लेकिन यह कई सामाजिक सांस्कृतिक चुनौतियां भी लेकर आता है। भारत के पर्वतीय क्षेत्रों में बढ़ता

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.034

`पर्यटन के कारण पर्यावरण पर भी बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है। पृथ्वी के सतह के लगभग 27% भाग में पर्वतीय क्षेत्र विस्तारित हैं, यह पहाड़ो एंव अनुप्रवाह क्षेत्र में रह रहे करोड़ो लोगों के जीवन यापन का आधार है। इन क्षेत्रों में रह रही आबादी के लिए संभावित रूप से दूरगामी एंव विनाशकारी परिणाम के साथ जलवायु परिवर्तन भूमि क्षरण तथा अत्यधिक दोहन एंव प्राकृतिक आपदाओं से खतरा है। आधुनिक पर्यटन पर्वतीय क्षेत्रो की पारिस्थितिकी, पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के साथ–साथ सामाजिक **l ajpukvksa ij Hkh xaHkhj izHkko Mky jgk gSA सतत विकास लक्ष्य संख्या 8 एवम 12** पहाड़ो में पर्यटन को एक लक्ष्य के रूप में शामिल करता है। **सतत विकास लक्ष्य संख्या 8** निरंतर समावेशी एंव सतत आर्थिक विकास के प्रसार पर केंद्रित है,ताकि वर्ष 2030 तक स्थाई पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए नीतियों को बेहतर ढंग से तैयार और कार्यन्वित किया जा सके। इससे रोजगार सृजन के साथ–साथ स्थानीय संस्कृति और उत्पादों को भी बढ़ावा मिलेगा। वहीं **सतत विकास लक्ष्य संख्या 12 'संख्या उत्पादन एंव खपत पैटर्न'**को सुनिश्चत करने से संबंधित है, इसका उद्देश्य सतत पर्यटन के लिए सतत विकास प्रभावो की निगरानी हेतु उपकरण विकसित करना एंव उपयोग करना है,इससे रोजगार सृजन के साथ स्थानीय संस्कृति एंव उत्पादों को बढ़ावा मिलेगा। भारत के पर्वतीय 12 राज्य सतत पर्यटन को बनाए रखने में कितने सक्षम है इसके लिए 12 मुख्य क्षेत्र–**आपदा प्रबंधन प्रदूषण नियंत्रण,पर्यटक यातायात प्रबंधन, संकट प्रबंधन, प्राकृतिक संसाधन एंव पारिस्थितिकी प्रबंधन, गुणवत्ता मानक/नियंत्रण तंत्र,पर्यटन उद्यम विकास प्रशासन,उर्जा, लैगिक आधार,विपणन एंव ब्रांडिग** का मूल्यांकन किया गया परंतु अधिकांश राज्यों में इन मापदंडो को नीतियों या योजनाओं के निर्माण में बहुत कम महत्व दिया जाता है। वर्ल्ड ट्रेवल एंड टूरिज्म (WTTC) द्वारा सतत पर्यटन के लिए, प्रमुख सिद्धांतों के आधार पर कई कार्य प्रस्तावित किए गए हैं इन कार्यो के कार्यान्वन से सतत पर्यटन संभव हो सकता है।

इसी प्रकार पर्वतीय क्षेत्र में टिकाऊ आजीविका के लिए सतत कृषि एक बेहतर विकल्प है। सतत कृषि का तात्पर्य कृषि और खाद्य उत्पादन के लिए एक समग्र दृष्टिकोण से है, जिसका उद्देश्य कृषि प्रणालियों की दीर्घकालिक व्यवस्था सुनिश्चित करते हुए तथा भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करते हुए भोजन एंव फाइबर की वर्तमान जरूरत को पूरा करना हैं। इसमें फसल प्रतिरूप जैविक खेती सामुदायिक सहायक कृषि आदि जैसी विभिन्न प्रथाओं और सिद्धांतों को शामिल किया गया है, जो पर्यावरण प्रबंधन आर्थिक लाभप्रदता तथा समानता पर ध्यान केंद्रित करते है। पर्वतीय एंव पहाड़ी क्षेत्रो में खेती की जाने वाली कृषि भूमि अकसर सीढ़ीदार खेती के साथ कुछ क्षेत्रों के लिए एतिहासिक विरासत और सांस्कृतिक पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं का प्रतिनिधित्व कर सकती हैं,ऐसे में इनका संरक्षण आवश्यक हो जाता है। पर्वतीय क्षेत्रो में कृषि के तौर तरीके भी अन्य भागों से थोड़ा अलग होते हैं, जिसका मुख्य कारण वातावरण के साथ–साथ अन्य कारकों का अलग होना है। ऐसी हालतों में अनाज की अपेक्षा, अन्य फसलों की अपेक्षा यहां सब्जियों का उत्पादन अधिक लाभप्रद है, क्योकि इसमें हमें कम भूमि से अधिक शुद्ध लाभ मिलता है इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए संरचित खेती का विकास किया गया है, जिससे तापमान, आर्द्रता, सूर्य का प्रकाश एंव हवा के आगमन में फसलो की आवश्यकता अनुसार परिवर्तन करके फसलों की उत्पादकता के साथ–साथ गुणवता भी बढ़ाई जा सकती है। इस प्रकार इस तकनीक के उपयोग से

सालभर बेमौसम सब्जियों का उत्पादन आसान हो जाता है। पर्वतीय क्षेत्रों में जाड़ो के मौसम में तापमान इतना कम हो जाता है कि पौधो की बढ़वार रूक सी जाती है, लेकिन इन्हीं पौधों को अगर पालीहाउस के अंदर लगाते है, इससे किसानों को सालभर रोजगार के अवसर प्रदान होते रहेंगे। यह तकनीक छोटे, सीमंत एवं बड़े किसानों सभी के लिए फायदेमंद है। इस प्रकार यह संरक्षित खेती पर्वतीय कृषि विकास को अधिक मजबूत बनाने में कारगर सिद्ध हो सकती है।

भारत सरकार के **कृषि एंव किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा** शुरू किया गया **एकीकृत बागवानी विकास मिशन MIDH** योजना जिसका कियान्वयन पूर्वोत्तर और हिमालय राज्यों में बागवानी के समग्र विकास के लिए किया जा रहा है। यह मिशन उत्त्पादन से लेकर उपभोग तक बागवानी के पूरे स्पेक्टम को फॉरवर्ड और बैकवर्ड लिंकेज के माध्यम से संबोधित करता है। पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि आधारित उद्योग यानी कृषि, बागवानी, जड़ी बुटी उत्पादन, बेमौसम सब्जियों के उत्पादन वृक्षारोपण, पशुपालन दुग्ध उत्पादन, मुर्गी पालन, मत्सय पालन, कृषि एंव फल प्रसंस्करण, चाय बागान एंव प्रसंस्करण उद्योग को बढ़ावा देने से पलायन की मार उद्योग झेल रहे पर्वतीय क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर बनेगें और पर्यावरण भी नहीं प्रभावित होगा।

उद्देश्य– प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य यह है कि, पर्वतीय क्षेत्रों में किस प्रकार टिकाऊ आजीविका, को अपनाया जाए कि, जिसमें लोगों को रोजगार की प्राप्ति हो भेदभाव व शोषण जैसी सामाजिक समस्याओं का समाधान हो, उन्नति का समान अवसर मिले संसाधनों का सुरूचिपूर्ण उपयोग हो, इसके अलावा यह गरीबी को कम करने और पर्यावरण को किस प्रकार बचाने में मदद कर सकती है।

आंकड़ा स्त्रोत और विधि तंत्र– प्रस्तुत शोध पत्र वर्णात्मक प्रकार का है, इसमें टिकाऊ आजीविका को किस प्रकार अपनाया जाए कि,प्राकृतिक संसाधनों का समूचित उपयोग करके उसे भविष्य की पीढ़ियों के लिए संरक्षित करते हुए पर्यावरण को भी संरक्षित किया जा सके, इसे ही विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है। इस शोध पत्र में द्वितीयक आंकड़ो का प्रयोग किया गया है, इसके अलावा विभिन्न वेबसाइटों, शोध पत्र पत्रिकाओं,समाचार पत्रों के माध्यम से भी जानकारी ली गई है।

निष्कर्ष

इस प्रकार स्पष्ट है कि यदि पर्वतीय क्षेत्रों और वंहा के निवासियों की आजीविका को भविष्य के लिए टिकाऊ बनाना है तो गरीबी कम करना और पर्यावरण में सुधार करना एक साथ जोड़ा जाना चाहिए। टिकाऊ आजीविका के लिए आजीविका ढांचा बनाया जाता है, यह ढांचा आजीविका को प्रभावित करने वाले कारकों और उनके बीच संबंधों को दिखाता है। इस ढांचे का इस्तेमाल नई विकास गतिविधियों की योजना इनाने और मौजूदा गतिविधियों का आंकनल करने में किया जाता है।

टिकाऊ आजीविका के लिए कृषि, मत्सय पालन, विविध फसल उगाना, जल संचयन, संरक्षण प्रबंधन, पर्यटन इत्यादि तरीके अपनाये जा सकते हैं। इससे आर्थिक व्यवहार्यता की सामाजिक स्थिति में सुधार होगा, रोजगार में वृद्धि होगी तथा भेदभाव और शोषण में कमी होगी तथा पर्यावरण का भी संरक्षण होगा।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.034

सुझाव

भारत में पर्वतीय क्षेत्र के विकास के लिए विभिन्न रणनीतियों का उपयोग किया जा सकता है,जो स्थिरता और स्थानीय भागीदारी पर केंद्रित हो। इसके लिए सतत पर्यटन को बढ़ावा देना होगा, पर्यावरण के अनुकूल पर्यटन प्रथाओं को प्रोत्साहित करना होगा। जो पर्वतीय क्षेत्रों की प्राकृतिक सुंदरता और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करते हो। इसके अलावा यहां के बुनियादी ढांचे में सुधार करना होगा, स्वास्थ्य सुविधाओं ओंर संचार नेटवर्क जैसी आवश्यक सुविधा का विकास करके इसे वहां के निवासियों की पहुंच तक बढ़ाना होगा। यह कार्य वहां के नाजुक पर्वतीय पारिस्थितिक त को ध्यान में रखते हुए करना होगा। यहां के क्षेत्र के लिए ऐसे कार्यक्रम लागू करना होगा जो स्थानीय किसानों का समर्थन करें और जैविक कृषि के तरीकों को बढ़ावा दें, इसमें खाद्य सुरक्षा में सुधार, स्थाई आजीविका प्रदान करने और शहरी क्षेत्र की ओर पलायन कम करने में मदद मिलेगी।

संदर्भ

1. https://www.drishtiias.com
2. https://www.krishisewa.com
3. https://www.myscheme.gov.in
4. https://askfilo.com
5. https://www.icimod.org
6. कुरूक्षेत्र अंक जून 2022 ग्रामीण पर्यटन प्रगति और संभावनाएं
7. योजना पत्रिका अक्टूबर 2022 हमारा पारिस्थितिक तंत्र
8. कुरूक्षेत्र जुलाई 2023 अंक सतत कृषि विकास के लिए प्रौद्योगिक
9. कुरूक्षेत्र अप्रैल 2024 ग्रामीण विकास को समृद्ध करता पयर्टन